आर. एन. आई. नं. : RJHIN16694

पोस्टल रजि. नं.

पशु पालन नए आयाम

परिकल्पना एवं निर्देशन – प्रो. (डॉ.) कर्नल ए. के. गहलोत

वर्ष : 01 अंक : 06 बीकानेर, फरवरी, 2014 मूल्य : 2 रूपये

प्रो. (डॉ.) कर्नल ए. के. गहलोत

कुलपति का संदेश

राज्य सरकार की 60 दिवसीय कार्य योजना

पशुपालकों और उपभोक्ताओं को कई सौगातें मिलेंगी

प्रिय पशुपालक एवं किसान भाईयो,

हमारे लिए हर्ष का विषय है कि राजस्थान पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय की छः परियोजनाओं और कार्यक्रमों को राज्य सरकार ने अपनी 60 दिवसीय कार्य योजना में शामिल किया है। राज्य की माननीया मुख्यमंत्री श्रीमती वसुन्धरा राजे की अध्यक्षता में गत दिनों पशुपालन विभाग की योजनाओं और कार्यक्रमों की समीक्षा बैठक शासन सचिवालय में आयोजित की गई जिसमें उन्होंने इस बाबत निर्देश दिए। इस निर्णय से राज्य के कृषकों और पशुपालकों के हित में राज्य सरकार की संवेदनशीलता से योजनाओं के त्वरित क्रियान्वयन में मदद मिलेगी। राज्य में पहली बार दुग्ध जांच के लिए आधुनिक तकनीक से युक्त एक प्रयोगशाला जयपुर में स्थापित की जाएगी। इससे दूध की गुणवत्ता की परख हो सकेगी। पूरे देश में राज्य का दूध उत्पादन में दूसरा स्थान है। पशुचिकित्सा वैज्ञानिकों और रसायनज्ञों की सेवाओं से दूध में रोगकारी किटाणुओं और सिन्थेटिक अवयवों की स्थिति, कीटनाशकों के दुष्प्रभावों व दवाईयों के अवशेषों के बारे में जानकारी हो सकेगी। प्रयोगशाला में जांच के नतीजों के आधार पर उत्पादकों के लिए लाभकारी और उपभोक्ताओं को गुणकारी दूध उत्पादन के उपाय किये जा सकेंगे। राज्य में पशु आहार और चारे की गुणवत्ता की जांच की योजना को भी 60 दिवसीय कार्य योजना में शामिल किया गया है। वेटरनरी विश्वविद्यालय के कोड़मदेसर (बीकानेर) स्थित पशु अनुसंधान केन्द्र पर चारागाह विकास एवं हरे चारे के उत्पादन केन्द्र की स्थापना भी की जाएगी। इस केन्द्र से पश्चिमी राजस्थान के पशुधन के लिए वरदान सेवण घास, चारा बीज व हरा चारा उत्पादन इकाई की स्थापना के साथ उच्च उत्पादक क्षमता वाले प्रजनक बीज तैयार कर पशुपालकों के उपयोग के लिए पंजीकृत उत्पादकों में वितरण किया जाना शामिल है।

राज्य में पशु आहार और चारे की गुणवत्ता की जांच की योजना को भी 60 दिवसीय कार्य योजना में शामिल किया गया है। वेटरनरी विश्वविद्यालय के कोड़मदेसर (बीकानेर) स्थित पशु अनुसंधान केन्द्र पर चारागाह विकास एवं हरे चारे के उत्पादन केन्द्र की स्थापना भी की जाएगी। दुग्ध जाँच की आधुनिक प्रयोगशाला शुरू होगी। राज्य सरकार की 60 दिवसीय कार्य योजना में जामडोली (जयपुर) में वेटरनरी क्लिनिक काम्पलेक्स का शिलान्यास किया जाएगा। इससे पूर्वी राजस्थान के जिलों के पशुपालकों को आधुनिक पशुचिकित्सा और ईलाज की विशेषज्ञ सेवाएं सुलभ होंगी।

विश्वविद्यालय द्वारा चारागाह विकास, भूमि सुधार की उपलब्धता बढ़ाने और उपलब्ध चारा स्त्रोतों का उपयोग कर उपयुक्त सेवण घास के संयोजन से संपूर्ण आहार का निर्माण करने जैसे कार्य शामिल किए जायेंगे। पशु आहार और चारे की पौष्टिकता को सुनिश्चित करने से पशुधन उत्पादन के सकारात्मक नतीजे मिल सकेंगे। राज्य सरकार द्वारा गौपालन मंत्रालय की स्थापना के साथ कार्य योजना में गौवंश के पंचगव्य के अनुसंधान को भी आगे बढ़ाने का निर्णय लिया गया है। दूध, घी, दही, गोबर और गौमूत्र (पंचगव्य) के अनुसंधान से मानव जाति के हित में इसके चिकित्सकीय उपयोग के बारे में अधिकृत जानकारी मिल सकेगी। वेटरनरी विश्वविद्यालय, आयुर्वेद विश्वविद्यालय जोधपुर के साथ आपसी करार (एम. ओ. यू.) कर अनुसंधान कार्य शुरू करेगा। राज्य सरकार की 60 दिवसीय कार्य योजना में जामडोली (जयपुर) में वेटरनरी क्लिनिक काम्पलेक्स का शिलान्यास किया जाएगा। इससे पूर्वी राजस्थान के जिलों के पशुपालकों को आधुनिक पशुचिकित्सा और ईलाज की विशेषज्ञ सेवाएं सुलभ होंगी। नवानियां – वल्लभनगर (उदयपुर) में हाइड्रोपोनिक्स तकनीक से हरा चारा उत्पादन मशीन का लोकार्पण किया जाएगा। पशुधन अनुसंधान केन्द्र कोड़मदेसर (बीकानेर) में गौवंश की साहीवाल नस्ल प्रजनन केन्द्र का शिलान्यास और वेटरनरी विश्वविद्यालय के बीकानेर परिसर में 9.5 लाख लीटर क्षमता के वर्षा जल संग्रहण तंत्र और नए बने तकनीकी संग्रहालय का लोकार्पण करवाया जाएगा।

नए वर्ष में मिलने वाली इन सभी सौगातों से राज्य के पशुपालकों और कृषक समुदाय को सुखी और समृद्ध बनाने में मदद मिलेगी।

(प्रो. ए. के. गहलोत)

अपने विश्वविद्यालय को जानें

राज्य का पहला
स्नातकोत्तर पशुचिकित्सा शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान

राजस्थान पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय के संघटक और राज्य में पहले स्नातकोत्तर पशुचिकित्सा शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान (PGIVER) के जयपुर में शुरू करने से पशुपालन जगत में एक नया आयाम स्थापित हुआ है। संस्थान को राजस्थान सरकार द्वारा बारहवीं पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत 2012 में अनुमोदित किया गया। इससे पूर्व यह संस्थान ''एपेक्स केन्द्र (Apex Centre) के रूप में पशुओं में रोग की जांच, निगरानी और शोध केन्द्र के रूप में कार्यशील था। राज्य में पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान में शिक्षण, शोध एवं विस्तार कार्यो में संस्थान मील का पत्थर साबित होगा। संस्थान में पशुचिकित्सा पाठ्यक्रम में क्लिनिकल, पैरा एवं नॉन क्लिनिकल विभाग अत्याधुनिक सुविधाओं के साथ प्रस्तावित हैं। सत्र 2013–14 में इस संस्थान में पशु आनुवांशिकी व प्रजनन विभाग, पशुचिकित्सा विज्ञान, पशुचिकित्सा रोग विज्ञान, पशुधन उत्पाद तकनीकी के सात नए विभागों का सृजन किया गया है। राजस्थान सरकार ने स्नातकोत्तर संस्थान के नये भवन के लिए 18.9 एकड़ ज़मीन राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 11, आगरा रोड़, जयपुर में आवंटित की है। यहां पूरे देश से पशुचिकित्सा में उच्च अध्ययन और शोध के लिए विद्यार्थी जयपुर आयेंगे। संस्थान से स्नातकोत्तर (पी.जी.) विद्यावाचस्पति (पी.एच.डी.) व पोस्ट डॉक्ट्रेट जैसी उपाधियों के धारक सहित पूरे देश के पशुचिकित्सा जगत में उच्च गुणवत्ता युक्त मानव संसाधन उपलब्ध करवाये जा सकेंगे। संस्थान द्वारा पशुचिकित्सा क्षेत्र में 15 विषयों में उच्च शिक्षा (पी.जी., पी.एच.डी.) प्रदान की जायेगी और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के शोध कार्य प्रारम्भ किये जायेंगे। यह पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में विशिष्ट और अति विशिष्ट मानव संसाधनों के सृजन और पशुधन मालिकों, किसानों की आवश्यकता के अनुसार अनुसंधान, विस्तार और विकास गतिविधियों को आगे बढ़ाने के लिए राज्य के एक प्रमुख पशुचिकित्सा संस्थान के रूप में कार्य करेगा।

संस्थान के निर्धारित क्षेत्र / उद्देश्य

- पशुचिकित्सा विज्ञान और पशुपालन के विभिन्न विषयों में उच्च शिक्षा देना।
- पशुधन स्वास्थ्य और उत्पादकता बढ़ाने के लिए राज्य की आवश्यकता के अनुसार अनुसंधान कार्यक्रम बनाना।
- राज्य के विभिन्न भागों में स्थित विभिन्न टेलीमेडिसीन केन्द्रों के लिए एक समन्वय संस्थान के रूप में और चारा, पशु रोगों, पशु उत्पादों के लिए एक डाटाबेस और नेटवर्क प्रणाली बनाना।
- परिसर और बाह्य परिसर से स्नातकोत्तर डिप्लोमा, उद्यमिता और पशुधन क्षेत्र में व्यावसायिक गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिए सर्टिफिकेट व डिप्लोमा कार्यक्रम।
- बीमार पशुओं के रोग निदान और उपचार के लिए एक रेफरल संस्थान के रूप में कार्य करना।
- पशुधन उत्पादकता बढ़ाने के लिए किसानों को अग्रिम प्रौद्योगिकीयों को प्रसार के लिए एक मंच प्रदान करना।
- जयपुर में उच्च दुग्ध गुणवत्ता की परीक्षण प्रयोगशाला स्थापित करके नए कृत्रिम सामग्री, उच्च रोगजनक सूक्ष्मजीवों की उपस्थिति, दवा और कीटनाशकों के अवशेष, प्रदूषण आदि के लिए पता लगाने के लिए क्षमता निर्माण।
- राजस्थान के अदिवासी उपयोजना क्षेत्रों में पशुपालन परिदृश्य व सम्भावनाओं का अध्ययन।
- डांग क्षेत्र में पशुपालन – परिदृश्य एवं संभावनाओं का अध्ययन।

प्रसार

- संस्थागत प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रदान करना और राज्य में पशुधन उत्पादकता बढ़ाने के लिए विस्तार मॉड्यूल उपलब्ध कराना।
- पशुपालन क्षेत्र से सम्बन्धित कृषि विज्ञान केन्द्रों और गैर सरकारी संगठनों सहित संबंधित विभागों के साथ सम्पर्क।

परामर्श और नमूना परीक्षण

- पशुपालन विकास कार्यक्रमों के सम्बन्ध में परामर्श करना।
- संक्रमण, उपापचय और पोषण की कमी की बीमारी के निदान के लिए विभिन्न चिकित्सकीय नमूनों के प्रयोगशाला परीक्षण करना।
- एंटीबायोटिक संवेदनशीलता और ELISA आधारित परीक्षण करना।
- पशु भोजन, दूध एवं पशु उत्पादों की सुरक्षा एवं गुणवत्ता मानकों के लिए प्रयोगशाला जांच।
- AAS द्वारा खनिज विश्लेषण का पता लगाना।

। आप हमें मानव संसाधन दें, हम आपको उन्नत तकनीक देंगे।

पशुओं में हिड़काव (रेबीज) रोग के कारण, लक्षण और बचाव के उपाय

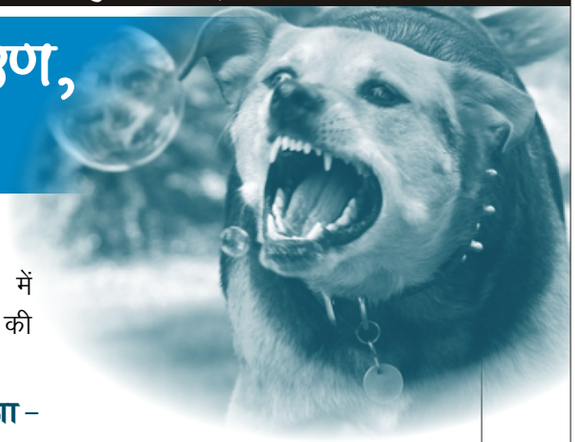

रेबीज एक अल्पकालीन विषाणुजनित संक्रामक रोग है, जो मनुष्यों तथा गर्म रक्त वाले जानवरों में फैलता है। इस रोग में मुख्यतया असाधारण व्यवहार, तंत्रिकाओं की उत्तेजना जैसे कि बढ़ी हुई उत्तेजनशीलता तथा अतिसंवेदनशीलता, चेतना को क्षति, आरोही क्रम में पक्षाघात तथा अंत में मृत्यु हो जाती है। रेबीज एक पुरातन रोग है जो कि विश्व के अलग – अलग भागों में तथा अलग – अलग प्रजातियों में पाया जाता है। मनुष्यों में इस रोग का मुख्य लक्षण पानी से भयभीत होना है। इस रोग के अन्य नाम हाइड्रोफोबिया, लाइसा, जलांटका, हिड़काव आदि हैं।

कारण –

रेबीज आर. एन. ए. विषाणुजनित रोग हैं जो कि रेब्डोविरीडी वर्ग के लाइसा प्रजाति से होता है। यह एक अभितांत्रिक विषाणु है जो कि सबसे ज्यादा शुद्ध तथा सान्द्र रूप में केन्द्रीय तंत्रिका तंत्र में पाया जाता है। इस विषाणु की संरचना बुलट (बन्दूक की गोली) के समान होती है। यह विषाणु दो प्रकार का होता है – फिक्स्ड तथा स्ट्रीट।

फैलाव –

यह एक जूनोटिक (मनुष्यों तथा पशुओं में आदान – प्रदान होने वाला) रोग है जो कि सामान्यतया रोगी पशु के काटने से फैलता है। रेबीज विषाणु नाक, मुंह तथा आँखों की श्लेष्मा झिल्ली को आसानी से भेद सकता है। रेबीज वाली प्रयोगशाला में अप्रत्याशित रूप से संक्रमण संभव है। इस रोग के प्रसारण में संधिपाद प्राणी कभी भी वाहक के रूप में लिप्त नहीं होता है। हालांकि पूर्व उदाहरणों के तौर पर यह ज्ञात है कि इस रोग का संक्रमण रोगी पशु के कच्चे दूध एवं मांस के खाने से तथा रोगी माता द्वारा शिशु को स्तनपान कराने से भी फैल सकता है। रेबीज रोग के प्रसारण में सीधे संपर्क का होना आवश्यक है। वेम्पायर चमगादड़ इस रोग में गुहिका का कार्य करती है। पशुओं तथा मनुष्यों में रेबीज रोग का रोगोद्भवन का समय परिवर्तनशील होता है। केन्द्रीय तंत्रिका तंत्र तक विषाणु के पहुंचने की क्षमता पशु की उम्र पर, रोगी पशु द्वारा काटे गये स्थान पर, विषाणु की उग्रता पर, विषाणु सांद्रता पर तथा घाव की दशा पर निर्भर करती है।

रोगजनन –

रेबीज ग्रस्त पशु द्वारा काटने के पश्चात् ये विषाणु संक्रमित लार द्वारा घाव में गहराई में जमा हो जाते हैं तथा उपकला कोशिका के अन्दर स्थानिक प्रतिकृति करते हैं। ये रेबीज विषाणु अपकेन्द्री यात्रा द्वारा परिधीय तंत्रिकाओं से मेरू – रज्जु तथा मस्तिष्क तक पहुँचते हैं। इसके पश्चात् यहाँ से अभिकेन्द्री यात्रा द्वारा लार ग्रंथियों तक पहुँचते हैं। गंभीर घावों में संक्रमित विषाणु रक्त तथा लसीका द्वारा भी फैल सकते हैं। रेबीज के विषाणु पशु के दूध से भी बाहर निकलते हैं, परन्तु दूध के द्वारा संक्रमण फैलना संभव नहीं है। संक्रमित गर्भधारित पशु से भ्रूण / शिशु में ये विषाणु प्रवेश कर जाते हैं।

रोग के लक्षण –

पशुओं (श्वानों) में मुख्यतया दो प्रकार की अवस्था होती है।

(अ) उग्र अवस्था –

इस अवस्था में पशु अत्यन्त उत्तेजनशील हो जाता है। रोगी पशु के व्यवहार में बदलाव आ जाता है। पशु में सजीव व निर्जीव वस्तु को काटने की मानसिकता उत्पन्न हो जाती है। रोगी पशु अपने मालिक की आज्ञा का पालन नहीं करता है। रोगी पशु असाधारण उग्रता तथा पागलपन वाला व्यवहार करता है। रोगी पशु एक स्थान से दूसरे स्थान तक बिना किसी दिशा – निर्देश के घूमता रहता है। रोगी पशु असाधारण रूप से सचेत तथा चौकस अवस्था में रहता है तथा उकसाने पर बहुत तेजी से प्रतिक्रिया करता है। शुरूआत में तो पशु की भूख पर कोई असर नहीं पड़ता लेकिन बाद में भूख कम हो जाती है। आँखों की पुतलियों का फैलाव हो जाता है तथा चेहरे के भावों में बदलाव आ जाता है। गलकोष एवं कंठनाल सम्बन्धी मांसपेशियों में पक्षाघात / गतिहीनता की वजह से रोगी पशु कुछ भी खाने – पीने में असमर्थ हो जाता है। रोगी पशु के मुंह से लगातार लार टपकती रहती है। अंतिम अवस्था में धीरे – धीरे श्वान के भौंकने की शक्ति कम हो जाती है, निचला जबड़ा लटक जाता है, जीभ बाहर की तरफ लटक जाती है तथा सिर नीचे की तरफ झुक जाता है। रोगी पशु को श्वांस लेने में तकलीफ, आरोही क्रम में पक्षाघात, बेहोशी तथा अंत में मृत्यु हो जाती है।

(ब) मौन अवस्था –

इसे पक्षाघात अवस्था भी कहते हैं। इस अवस्था में निचले जबड़े, जीभ, कंठनाल तथा पिछले पैरों का पक्षाघात हो जाता है। पशु काटने में असमर्थ हो जाता है परन्तु लार में रेबीज का विषाणु हमेशा उपस्थित होता है। गले की मांसपेशियों में पक्षाघात की वजह से विशेष आवाज निकलती है जिसे हाऊल कहते हैं। पशु का मुंह हमेशा खुला रहता है। पशु सुस्त तथा एकांत जगह में रहता है। अंतिम अवस्था में रोगी पशु लगातार बढ़ती हुई कमजोरी तथा पक्षाघात की वजह से जमीन पर गिर जाता है और अंत में बेहोशी और मृत्यु हो जाती है। सामान्यतया लक्षण प्रकट करने के पश्चात् एक से दस दिन में पशु की मृत्यु हो जाती है।

- बिल्ली में श्वान की बजाय ज्यादा उग्र लक्षण प्रकट होते है। रोगी बिल्ली मुख्यतया सामने उपस्थित मनुष्य तथा पशु के चेहरे पर वार करती है।
- इस रोग में अश्वों में टिटनेस रोग जैसे लक्षण दिखाई देते हैं।
- गाय, भैंस तथा भेड़, बकरियों में मुख्यतया लैंगिक उत्तेजना आ जाती है। रोगी गाय तथा भैसों के कानों में फड़कन भी उत्पन्न हो जाती है।

(शेष पृष्ठ 4 पर...)

(रेबीज..... पृष्ठ 3 का शेष)

- रोगी मनुष्यों में शुरूआत में हल्का बुखार, सिर में दर्द, जी मचलाना तथा गले में खराश होती है। धीरे – धीरे उत्तेजना, व्यग्रता, मांसपेशियों में ऐंठन, पुतली का फैलना, आंसुओं का बहना, लार का ज्यादा टपकना तथा पसीना आना प्रमुख है। अंतिम अवस्था में रोगी के गले तथा श्वसन की मांसपेशियों में अकड़न, शरीर में पक्षाघात, अकड़न / ऐंठन तथा अंत में मृत्यु हो जाती है।

निदान –

पशु को पूर्व में किसी रेबीज पशु द्वारा काटने के इतिहास द्वारा, वर्तमान में पशु में उपस्थित लक्षणों द्वारा, प्रयोगशाला जांच द्वारा –

- कोशिका विज्ञान अध्ययन द्वारा मृत रोगी पशु के मस्तिष्क में नेग्री बॉडीज की उपस्थिति इस रोग का प्रमाण है।
- प्रयोगशाला में उपयोग होने वाले छोटे जानवरों जैसे कि चूहे के शरीर में मृत रोगी पशु का मस्तिष्क, लार ग्रंथि अथवा लार के कुछ हिस्से को प्रवेश करते हैं और सातवें दिन चूहे उपस्थित लक्षणों, शरीर के अंगों में उपस्थित बदलावों तथा चूहे के मस्तिष्क में नेग्री बॉडीज की उपस्थिति इस रोग की निश्चितता को दर्शाती है।
- प्रयोगशाला तकनीक जैसे फ्लूरोसेंट एंटीबोडी तकनीक, इम्यूनोपर ओक्सीडेज तकनीक, कॉम्पलीमेंट फिक्सेशन तकनीक, डोट–हाइब्रिडाइजेशन तकनीक, पालीमरेज–चेन तकनीक तथा अन्य जांचों जैसे कि हीमेग्लूटीनेशन, जेल डिफ्यूजन तथा रेडियोइम्यूनो ऐसे आदि से भी इस रोग की जांच की जा सकती है।

उपचार –

रेबीज रोग का कोई निश्चित इलाज नहीं है। लक्षणों के आधार पर शामक तथा नशीली औषधियां उपयोग में ली जाती हैं। प्रयोगात्मक पशुओं में उपस्थित रेबीज विषाणु के विरूद्ध कुछ रसायन – चिकित्सा (कीमोथैरेपी) संबंधी औषधियों जैसे कि विनक्रिस्टिन, स्कोपोलामाइड हाइड्रोब्रोमाइड, डाईहाइड्रोक्सीप्रोपाइलेडिनीन आदि की अच्छी प्रतिक्रिया है। रोगी पशु द्वारा काटे गये हिस्से को साफ पानी तथा साबुन से अच्छी तरह से साफ करना चाहिये। क्षार इस विषाणु की गुणनक्षमता को रोकता है, इसलिये कास्टिक सोडा उपयोग में ले सकते हैं। टिंचर आयोडीन भी मददगार औषधि है। एंटीरेबीज सीरम को घाव पर छिड़कना चाहिये। घाव में चौबीस घंटे के अन्दर टांके नहीं लगाने चाहिये क्योंकि टांके के दौरान लगी अतिरिक्त चोट इस विषाणु को घाव में ओर अन्दर जाने में मददगार साबित होती है। अगर आवश्यकता है तो दो दिन के बाद ही टांके लगाने चाहिये तथा पशु को पर्याप्त प्रतिजैविक औषधि देनी चाहिये। स्वस्थ पशु का समय – समय पर रेबीज रोग से बचाव का टीकाकरण करवाकर ही इस रोग को नियंत्रित किया जा सकता है। रेबीज पशु द्वारा काटने के तुरंत पश्चात् भी इस रोग का टीकाकरण चिकित्सक की सलाहनुसार करवाया जा सकता है। इस टीकाकरण समय सारणी में काटे हुये पशु मनुष्य का 0, 3, 7, 14, 28, 45, तथा 90वें दिन पर टीकाकरण होता है। बाजार में यह टीका अलग – अलग नामों से उपलब्ध है।

डॉ. नजीर मोहम्मद, डॉ. प्रेरणा नाथावत, प्रो. (डॉ.)ए. के. कटारिया
(मो : 09460073909) राजुवास

दुधारू गाय का चयन कैसे करें ?

बछड़ों के झुंड से अच्छी बछड़ी चुनना एक कला है। दुधारू गाय का चुनाव के लिए इन बातों को ध्यान में रखा जाना चाहिये :–

- जब भी किसी पशु मेले से कोई मवेशी खरीदा जाता है तो उसे उसकी नस्ल की विशेषताओं और दुग्ध उत्पादन की क्षमता के आधार पर परखा जाना चाहिये।
- इतिहास और वंशावली देखी जानी चाहिये क्योंकि अच्छे कृषि फार्मो द्वारा ऐसा हिसाब रखा जाता है।
- दुधारू गायों का अधिकतम उत्पादन प्रथम पाँच बार प्रजनन के दौरान होता है। इसके चलते आपका चुनाव एक या दो बार प्रजनन के पश्चात् का होना चाहिये। वह भी प्रजनन के एक माह की अवधि में होना चाहिए।
- उनका लगातार दूध निकाला जाना चाहिये जिससे औसत के आधार पर उसकी दूध देने की क्षमता का आंकलन किया जा सके।
- जानवर खरीदने के लिये अक्टूबर व नवम्बर माह सर्वोत्तम है।
- अधिकतम उत्पादन प्रजनन के 90 दिनों तक नापा जाता है।

दुग्ध उत्पादन करने वाली गाय की कुछ विशेषताएं –

- आकर्षक व्यक्तित्व, मादाजनित गुण, ऊर्जा, सभी अंगों में समानता व सांमजस्य व सही उठाव।
- जानवर के शरीर का आकार खूँटा या रूखानी के समान होना चाहिये।
- उसकी आँखे चमकदार व गर्दन पतली होनी चाहिये।
- थन, पेट से सही तरीके से जुड़े हुये होने चाहिये।
- थनों की त्वचा पर रक्त वाहिनियों की बनावट सही होनी चाहिये।

डॉ. खुशबू कन्नोजिया, (08764258461)राजुवास

पशु प्रबंधन : पशु के प्रजनन और उत्पादन के आंकड़े रखना लाभकारी

पशुपालकों को प्रजनन व उत्पादन तथा अन्य गतिविधियों का लेखा जोखा एवं फार्म रिकार्ड रखना चाहिए। गौशाला पर होने वाली विभिन्न गतिविधियों का रिकार्ड पशुपालक अवश्य रखें। इसमें मुख्य हैः–

वंशावली रिकार्ड, प्रजनन सम्बन्धी रिकार्ड, उत्पादन सम्बन्धी रिकार्ड, आहार (दाना–चारा) रिकार्ड, आय–व्यय रिकार्ड, पशुओं का स्वास्थ्य सम्बन्धी रिकार्ड आदि।

संतानोत्पादन में वंशावली एवं पूर्वजों के दुग्धोत्पादन अथवा अन्य उत्पादन लेखा–जोखा को यदि ठीक प्रकार से रखा जाये तो आदर्श रूप से उत्तम प्रबंधन कर अधिक लाभ लिया जा सकता है। इसमें कम से कम 3 पीढी का ब्यौरा पशुओं के ग्याभिन एवं बच्चे देने की दिनांक, आहार में अनाज, प्रतिदिन का दाना–भूसा आदि का ब्यौरा आय–व्यय आंकलन हेतु आवश्यक होता है। प्रतिदिन प्रतिमाह एवं पूरे समय के उत्पादन का रिकार्ड रखा जा सकता है। साथ ही दागना, सींग काटना, मां से पृथक करने की दिनांक, व्यस्क होना, प्रथमवार मदकाल में आना आदि का रिकार्ड उत्तम उत्पादन चयन हेतु रखना अति आवश्यक समझा जाता है। गौशाला के हर कार्य का उचित रिकार्ड रखना चाहिए। पशुपालन के आय व व्यय के रिकार्ड से इस व्यवसाय में होने वाले लाभ व हानि के बारे में आंकलन किया जा सकता हैं। पूर्व में होने वाली बीमारियों की सूचना से पूर्व में ही चिकित्सा अथवा रोकथाम के प्रयास किये जा सकते हैं। इसमें ही जन्मतिथि से लेकर मृत्यु तक की सभी जानकारी होने पर चयन, प्रजनन, आहार की आयोजना तैयार कर सकते हैं। वंशावली हेतु रजिस्टर प्रत्येक प्रक्षेत्र पर अपनाये जाते हैं जिससे एक आदर्श गौशाला के रूप में विकसित कर सकेगें तथा अधिक व स्वच्छ दूध का उत्पादन अथवा अन्य उत्पादक पदार्थो से पशुपालन व्यवसाय निखर सकता है। पशु पालकों को गौशाला पर होने वाली गतिविधियों जैसेः– पशु की जन्मतिथि, लिंग, रंग, पहचान, ग्याभिन करने की तारीख, ब्याने की तारीख, प्रतिमाह शारीरिक भार वृद्वि, मां से पृथक करने पर वजन, दूध उत्पादन, बीमार की तारीख, दाना, चारा, मात्रा व कीमत, टीकाकरण, पशु का इतिहास, आदि का लेखा–जोखा अवश्य रखना चाहिए जिससे बैंलेन्स शीट एवं पशु का इतिहास जानने में अत्यधिक मदद मिलती है एवं लाभ भी अधिक लिया जा सकता है।

वंशावली हेतु लेखा रखने अति आवश्यक होते हैं

पैदा होने, मरने एवं बेचे जाने का रजिस्टर, प्रतिदिन का सुबह – शाम का दुग्धोत्पादन का विवरण, दुग्धोत्पादन का मासिक लेखा। गत पांच वर्षो का प्रतिमाह की तुलना हेतु विवरण, प्रजनन लेखा (वयस्कता की उम्र, प्रथम मदकाल की उम्र, कृत्रिम गर्भाधान की तिथि, गर्भ धारण की तिथि, ब्याहने की तिथि, ब्यांत अंतराल, ब्यांत के बाद प्रथम मदकाल की तिथि), क्रय किये गये सामान मशीन, दाना,चारा, एवं अन्य वस्तु का विवरण, बीमारी/टीकाकरण/ कृमिनाशक, कीटनाशक का प्रतिदिन/प्रतिमाह का विवरण, वंशावली और दुग्धोत्पादन का लेखा, पशु निकासी विवरण, अन्य आय–व्यय का विवरण।

डॉ. जय प्रकाश कच्छावा, डॉ. टी. के. गहलोत, मुकेश श्रीवास्तव, सुभाष कच्छावा (मो :– 09414137029) राजुवास

पशुपालक पशुओं में खुरपका – मुँहपका रोग पहचान एवं प्रबंधन कैसे करें ?

खुरपका – मुँहपका एक विषाणु जनित रोग है जो इस मौसम में मुख्यरूप से खुर वाले पशुओं जैसे गाय, भैंस, ऊँट, भेड़, बकरी आदि में प्रायः देखने को मिलता है। इस रोग की पहचान पशुपालक रोग के लक्षणों के आधार पर आसानी से कर सकते है। बीमारी के सामान्य लक्षणों में तेज बुखार आना, मुँह से लार गिरना, जीभ, होंठ, मुँह के अन्दर, थन तथा खुर के बीच वाले भाग पर छाले होना मुख्य है। हांलाकि यह बीमारी वयस्क पशुओं में घातक नहीं होती लेकिन कम उम्र में पशु सामान्यतया मौत का शिकार हो जाते हैं। वयस्क पशु रोग के प्रभाव में अत्यधिक कमजोर हो जाता है और दुग्ध उत्पादन घट जाता है। मुँह तथा पैरों में छालों के कारण पशु खाने – पीने तथा चलने में असमर्थ हो जाता है। पशुपालक को इस बीमारी के कारण अप्रत्यक्ष रूप से अत्यधिक आर्थिक हानि उठानी पड़ती है और कभी – कभी जागरूकता के अभाव में यह बीमारी महामारी का रूप भी ले लेती है। अतः पशुपालक अगर समय रहते बीमारी को गंभीरता से ले तो अपने पशुओं को भली प्रकार बचा सकते है।

रोग का प्रबंधन :

- रोग से बचाव ही उसका प्रथम उपचार है अतः पशुपालक अपने पशुओं को स्वच्छ वातावरण, उचित पोषण एवं देखभाल प्रदान करें।
- चूँकि यह एक संक्रामक रोग है जो अन्य स्वस्थ पशुओं में बहुत तेजी से फैलता है अतः पशुपालक आवश्यक रूप से रोगग्रस्त पशु को अन्य पशुओं से शीघ्रतिशीघ्र पृथक करें।
- पशुओं को आवश्यक रूप से समय – समय पर टीकाकरण करवाये। प्रथम टीकाकरण 4 माह की उम्र पर, द्वितीय (बूस्टर) प्रथम टीकाकरण के 2 से 4 सप्ताह बाद तत्पश्चात् पुनः टीकाकरण द्वितीय टीकाकरण के हर 6 महीने बाद कराएं।
- रोग फैलने की दशा में अपने निकटतम पशु – चिकित्सक से संपर्क करें।

प्रो : ए. के. कटारिया, अपेक्स सेंटर, राजुवास

विश्वविद्यालय में स्नातकोत्तर शोध कार्य

बकरियों में पैर के रोगों का शयनिक अध्ययन

वर्तमान और अतीत प्रभावी अध्ययन में पैरों के रोग वृद्धावस्था वाली बकरियों में बकरों की अपेक्षा अधिक पाये गये। वर्षा ऋतु में रोग अधिक पाया गया। रोग पिछले पैरों की अपेक्षा अगले पैरों में अधिक पाया गया। इस बात को विचार में लाये बिना कि रोग पिछले पैरों में है या अगले पैरों में, बाहरी पंजा भीतरी पंजे से अधिक रोग ग्रसित पाया गया। 'अधिक बढ़ें हुए खुर' नामक अपसामान्यता सबसे अधिक पाई गई। पैरों में पाये जाने वाले अन्य रोग इस प्रकार थे – तीव्र संधिशोध, अंगुलियों के बीच की त्वचाशोध, पैरों का क्षय, फेटलॉक या पेस्टर्न का घाव, अभिघातक चोट, अंगुलियो के बीच ऊतक वृद्धि, ऐड़ी पर सूजना या घाव, अंगुल्यस्थियों का अस्थिभंग, छिदे हुए पैर एवं बढ़ेंगा पेस्टर्न। सामान्य विकिरण चित्रण परीक्षण ने पैरों के विभिन्न रोगों के विभेदन में महत्वपूर्ण सहायता उपलब्ध कराई। 'अधिक बढ़े हुए खुर' नामक रोग विकिरण चित्रण द्वारा निम्न लक्षणों युक्त पहचाने गए – अंगुत्यस्थियों की बाह्य अध्यअस्थियाँ, दूरस्थ अंगुल्यस्थि की ओस्टियोलिसिस या डिमिनरेलाइजेशन, द्वितीय अंगुत्यस्थि का घूर्णन, अंगुल्यस्थियों के अस्थिभंग। खुरों की दोषनिवारक काट – छांट की अच्छी प्रतिक्रिया देखी गई। चिकित्सा हेतु सन्तोषप्रद रूप से सभी प्रकार के रोगों को उपचारित किया। पशुओं के मालिकों को पैरों के रोगों के आपात को कम करने हेतु पशुओं के लिए अच्छा स्वास्थ्यकर वातावरण, नियमित रूप से खुरों की काट – छांट, नीले थोथे के एक प्रतिशत विलयन में पैरों का स्नान एवं पर्याप्त कसरत की सलाह दी गई।

– डॉ. सुनील कुमावत, डॉ. एन. आर. पुरोहित (मो : 01512528354) राजुवास

सर्वाधिक सम्भावित पशु रोग पूर्वानुमान-फरवरी, 2014

पशु रोग	पशु प्रकार	क्षेत्र
फड़किया रोग ऐन्टेरोटोक्सिमिया)	भेड़ बकरी	जयपुर, धौलपुर हनुमानगढ़, श्रीगंगानगर
सर्रा (तिबरसा)	गाय, भैंस, ऊँट	धौलपुर, श्रीगंगानगर, भरतपुर, अनूपगढ़, सीकर
एम्फीस्टोमियेसिस (Amphistomiasis)	गाय, भैंस, बकरी, भेड़	भरतपुर, कोटा, धौलपुर
पी.पी.आर. (PPR)	भेड़, बकरी	नागौर, बीकानेर, चुरू, हनुमानगढ़, सीकर आदि
फेसियोलियेसिस (Fascioliasis)	भैस, गाय, बकरी, भेड़	भरतपुर, कोटा, धौलपुर, डूँगरपुर, हनुमानगढ़, सवाई माधोपुर, सीकर, उदयपुर
हेमरेजिक सेप्टीसिमिया (गलघोटूँ)	गाय, भैंस	सीकर, नागौर, चित्तौड़गढ़, पाली, टोंक, दौसा, बून्दी, भरतपुर, भीलवाड़ा, अलवर
मुँह खुरपका रोग (Foot & Mouth Disease)	गाय, भैंस,	दौसा, जयपुर, अनूपगढ़, धौलपुर, अलवर, बारां, भरतपुर, चित्तोड़गढ़, श्रीगंगानगर, नागौर, बीकानेर, सीकर
बबेसियोसिस, खून मूतना (Babesiosis)	गाय, भैंस	धौलपुर, बून्दी, डूँगरपुर, अनूपगढ़, चित्तौड़गढ़, सीकर, बीकानेर
माता रोग (Sheep Pox, Goat Pox)	भेड़, बकरी	बीकानेर, श्रीगंगानगर, सीकर, अनूपगढ़
लँगड़ा बुखार (Black Quarter)	गाय	चित्तौड़गढ़, हनुमानगढ़
प्लूरोन्यूमोनिया (CCPP)	बकरी	श्रीगंगानगर, बीकानेर, जोधपुर
थाइलेरियोसिस (Theileriosis)	गाय	चित्तौड़गढ़, बीकानेर

मुर्गियों में निम्न रोगों के होने की सम्भावनां हैं जिनके हिन्दी में नाम प्रचलित नहीं होने के कारण अँग्रेजी नाम दिये जा रहे हैं। मुर्गी पालकों से निवेदन हैं कि इस संबंध में विस्तृत जानकारी निकटतम पशु चिकित्सालय के चिकित्सक से प्राप्त कर लें – Infectious Bursal Disease (IBD), Chronic Respiratory Disease (CRD), Respiratory Disease Complex, Leucosis, Colibacillosis, Coccidiosis, Round & Tape Worms and Coryza.

विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करे – डॉ. बी.के. बेनीवाल, अधिष्ठाता, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर, डॉ. अन्जु चाहर, विभागाध्यक्ष, जनपादकीय रोग विज्ञान एवं निवारक पशु औषध विज्ञान विभाग एवं डॉ. ए.के. कटारिया, प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर, राजुवास, बीकानेर ।

फोन– 0151–2543419, 2544243, 2201183

सफलता की कहानी

महावीर ने हौसलों से भरी उड़ान

''उम्मीद के पँखों से, मन में उड़ान रखना, तुम अपनी निगाहों में आसमान रखना।'' परलीका गांव के महावीर ने इसी हौसले के साथ पुश्तैनी खेती–बाड़ी का काम संभाला। उसे किसी की नौकरी न ही किसी की चाकरी करने की जरूरत पड़ी। अपनी दूरदृष्टि, मेहनत और लगन के बूते वह अपने गांव में ही रहकर आराम की जिन्दगी बसर कर रहा है। हनुमानगढ़ जिले की नोहर तहसील के निवासी महावीर जाट प्राथमिक स्तर की शिक्षा प्राप्त कर पुश्तैनी खेती के व्यवसाय से जुड़ गया। उसे रोजगार व नौकरी के चक्कर में भटकना नहीं पड़ा। महावीर अपने परिवार के सदस्यों के साथ मिलकर खेती का काम करने लगा। उसने खेती की जिम्मेदारी संभालते ही खेत में सिंचाई सुविधा के विस्तार के लिए डिग्गी का निर्माण करवाया। सिंचाई की सुविधा विकसित होने के उपरान्त कुछ वर्षों तक गेहूँ, जौ, चना, सरसों, ग्वार सहित अन्य परम्परागत फसलों की खेती करता रहा। लेकिन बाद में कृषि विभाग और कृषि विज्ञान केन्द्र से जुड़ने के दौरान आधुनिक खेती को समझने और देखने का मौका मिला और मन में तकनीक आधारित खेती से जुड़ने की ललक पैदा हुई।

महावीर ने अपनी पुश्तैनी जमीन में कुल 12 बीघा जमीन पर लगभग 7–8 वर्ष पूर्व किन्नू का बाग स्थापित किया। बगीचे में किन्नू उत्पादन करके गत वर्षो से बाजार में बिक्री करने पर कुल 40–50 हजार से डेढ़ लाख रूपये तक की आमदनी प्राप्त की। बाग में इन्टर – क्रोपिंग से ग्वार, चना इत्यादि से अतिरिक्त आय भी प्राप्त की। बागवानी के बाद शेष बची जमीन में परम्परागत फसलों से उत्पादन लिया। पशुधन के रूप में उनके पास कुल आधा दर्जन छोटे – बड़े पशु हैं। घर में उपयोग के बाद शेष दूध को स्थानीय स्तर पर विपणन कर 3–4 हजार रूपये की अतिरिक्त आय प्राप्त करते हैं। खेती से जुड़ने के बाद महावीर ने पाया कि व्यक्ति बाजार मांग आधारित व तकनीक आधारित पशुपालन और खेतीबाड़ी कर उत्पादन ले तो नौकरी से भी कहीं बेहतर आय अर्जित की जा सकती है।

महावीर जाट (मो : 9166828678)

मुख्य समाचार

वेटरनरी विश्वविद्यालय में आपदा प्रबंधन पर 41 पशुपालक–कृषकों का प्रशिक्षण पूरा हुआ

बीकानेर। वेटरनरी विश्वविद्यालय के पशु आपदा प्रबंधन प्रौद्योगिकी केन्द्र द्वारा जिले के 41 किसान–पशु पालकों को आपदाओं से बचाव के उपाय और रोगोपचार के बारे में एक दिवसीय प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ वेटरनरी कॉलेज के अधिष्ठाता प्रो. बी.के. बेनीवाल ने किया।

आपदा प्रबंधन केन्द्र के मुख्य अन्वेषक और प्रशिक्षण प्रभारी प्रो. टी.के. गहलोत ने कहा कि सूखा, बाढ़ और अकाल जैसी स्थितियों सहित अन्य प्राकृतिक आपदाओं से मानव जीवन की तरह पशुधन भी उतना ही प्रभावित होता है। उन्होनें कहा कि पशुपालकों को आपदाओं और संक्रामक बीमारियों के कारण होने वाले पशुधन क्षति को रोकने में महत्वपूर्ण भूमिका है अतः प्रशिक्षण के दौरान प्राप्त जानकारी को अन्य के साथ भी साझा करें। जलवायु, भूगर्भिक प्रकार सहित दुर्घटना जनित, आपदाओं के प्रकार, सर्दियों में तथा डॉ. संजली सोरेन ने तापघात आपदाओं के कारण, निवारण और उपचार के बारे में जानकारी उपलब्ध करवाई। संभागियों ने वेटरनरी विश्वविद्यालय में स्थापित पशु फायर सेफ्टी हट, वातानुकूलित आपात वार्ड सहित हरे चारे उत्पादन की हाइड्रोपोनिक्स मशीन का अवलोकन किया।

शरीर रचना वैज्ञानिकों का राष्ट्रीय सम्मेलन और संगोष्ठी संपन्न : 215 वैज्ञानिक और शोधकर्त्ता जुटे

बीकानेर। वेटरनरी विश्वविद्यालय के तत्वावधान में पशुचिकित्सा रचना वैज्ञानिकों के भारतीय संघ का 28 वां वार्षिक सम्मेलन और तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी वेटरनरी विश्वविद्यालय में आयोजित की गई। ''पशुचिकित्सा शरीर रचना विज्ञान वीजन – 2050'' विषयक संगोष्ठी मे देशभर से 215 वैज्ञानिक, शोधकर्त्ता, छात्र और उद्यमी शामिल हुए। राजस्थान तकनीकी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. एच. के. व्यास और वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. ए. के. गहलोत ने दीप प्रज्जवलित कर 8 जनवरी को इसका शुभारंभ किया। ''वेटरनरी एनाटॉमी वीजन – 2050'' पर अपने मुख्य उद्‌बोधन में कुलपति प्रो. ए. के. गहलोत ने कहा कि भविष्य की चुनौतियों से निपटने के लिए मनुष्य और पशुओं के रचना विज्ञान विभाग का सुदृढ़ीकरण किया जाना जरूरी है क्यों कि पशुचिकित्सा अनुसंधान में यह विषय नींव की ईंट की तरह है। उन्होंने कहा कि विशेषज्ञों को इसके लिए उपकोशकीय और आणविक एनाटॉमी के स्तर तक अनुसंधान किया जाना जरूरी हो गया है। भ्रूण के साथ ही स्टेम सैल, हिस्टोलॉजी, आणविक जीव विज्ञान, बायोटेक्नॉलॉजी और बायोकेमेस्ट्री की विधाओं का पूरा उपयोग करके ही वांछित परिणाम तक पहुँचा जा सकता है। एनाटॉमी एसोसिएशन के अध्यक्ष एवं तिरूपति वेटरनरी कॉलेज के अधिष्ठाता डॉ. टी. एस. चन्द्रशेखर राव और सचिव डॉ. अजय प्रकाश ने भी संबोधित किया। एसोसिएशन के वार्षिक पुरस्कारों की घोषणा की गई जिसमें एसोसिएशन का फैलोशिप अवार्ड बीकानेर के प्रो. राकेश माथुर को प्रदान किया गया। सम्मेलन के समापन सत्र की मुख्य अतिथि महाराजा गंगासिंह विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. चन्द्रकला पड़िया और अध्यक्षता वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर के अधिष्ठाता प्रो. बी. के. बेनीवाल ने की। एसोसिएशन द्वारा देश में विभिन्न शोध और वैज्ञानिक कार्यो में जुटे 13 वैज्ञानिकों को उत्कृष्ट कार्यो के लिए पुरस्कार प्रदान किये गए। सम्मेलन के अंत में वैज्ञानिक सिफारिशों में इम्यूनोहिस्टोलॉजी और वन्य प्राणियों की शरीर रचना विज्ञान पर ओर अधिक शोध की आवश्यकता जताई गई। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के स्तर पर पशु शरीर रचना विज्ञान विषय को नेट परीक्षा में शामिल करने सहित सिफारिशों को राज्य और केन्द्र सरकार को क्रियान्वयन के लिए भिजवाया जाना सुनिश्चित किया गया।

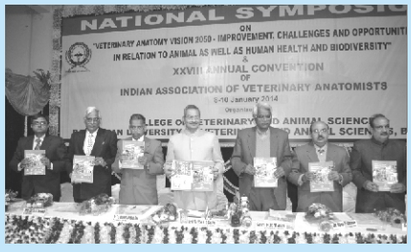

निदेशक की कलम से.....

पशु पालन : एक भरोसेमन्द व्यवसाय

पशुपालन प्राचीन काल से हमारी आजीविका का प्रमुख आधार रहा है। गांवों में खेत – खलिहानों के साथ पशुपालन को एक व्यवसाय के रूप में अपनाकर खेती – बाड़ी के जोखिम को कम किया जा सकता है। इस व्यवसाय को करने के लिए किसी अतिरिक्त योग्यता की जरूरत नहीं होती। पशुपालन अब गाय – भैंस पालने तक ही सीमित नहीं है लेकिन इसमें डेयरी, भेड़, बकरी, मुर्गी, और मधुमक्खी पालन जैसे कार्यो को जोड़ने से अच्छी आय प्राप्त की जा सकती है। बाजार में पूरी तरह से जानकारी प्राप्त करें और फिर तय करें कि आप कौन सा व्यापार करना चाहते हैं। किसी भी व्यवसाय को सफल बनाने के लिए योजनाबद्ध तरीके से आगे बढ़ें। इसके लिए आपको तकनीकी जानकारी के साथ पक्का इरादा और कड़ी मेहनत की आवश्यकता पड़ेगी। डेयरी व्यवसाय के लिए भी आपको कुछ बातों का विशेष ध्यान रखना होता है जैसे – उत्तम नस्ल का चुनाव करना, आहार का उचित प्रबंधन करना, पशुओं की उचित चिकित्सा व्यवस्था और विपणन की व्यवस्था करना शामिल है।

पशुओं में उत्तम नस्ल का चुनाव करना जरूरी होता है कि उस वातावरण में किस प्रकार के पशु रह सकते हैं। इससे आप भविष्य में होने वाले नुक्सान से बच जाते हैं। पशु को संतुलित आहार में हरा चारा, दाना – पानी आदि की भरपूर मात्रा दें। पशुओं के लिए आहार घर पर भी बनाया जा सकता है। पशुओं को पर्याप्त मात्रा में पानी पिलाना चाहिये। इन सभी के लिए जरूरी है उचित प्रबन्धन और देखभाल की। इसमें पशु के रहने का स्थान साफ – सुथरा होना चाहिये। गर्मी, सर्दी और बरसात से बचाव की उचित व्यवस्था होनी चाहिये। बिजली, पानी की उचित व्यवस्था करें। रोगी पशुओं का समय पर उपचार करवाना चाहिये। पशुओं के उत्पाद को सहकारी समिति, उपभोक्ता, दुकानदार को सीधा देना चाहिये। इस तरह से किये गये पशुपालन व्यवसाय की शुरूआत आपको निश्चय ही सफलता दिलाएगी। पशुपालन जैसे एक लाभदायक और भरोसेमन्द व्यवसाय को अपनाकर आप अपना भविष्य उज्जवल बना सकते हैं।

प्रो. (डॉ.) चन्द्रेश कुमार मुरड़िया
प्रसार शिक्षा निदेशक

आकाशवाणी बीकानेर से प्रसारित धीणे री बात्यां

प्रत्येक गुरूवार को प्रसारित धीणे री बात्यां के अन्तर्गत फरवरी 2014 में राजस्थान पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर के निम्न वैज्ञानिकगण अपनी वार्ता देंगें –

क्र.सं.	वार्ताकार का नाम व पद	वार्ता का विषय	प्रसारण तिथि
1	ड़ा. अनिल दाधीच, एबीजी विभाग	बदलते मौसम में पशुओं की देखभाल व रख रखाव	06.02.2014 सायं 7:15 बजे
2	प्रोफेसर ए. पी. सिंह, पशु औषध विभाग	मुर्गियों से मनुष्यों में फैलने वाले रोग व उनसे बचाव	13.02.2014
3	प्रोफेसर उर्मिला पानु, एबीजी विभाग	खरगोश पालन – एक व्यवसाय के रूप में	20.02.2014
4	प्रोफेसर त्रिभुवन शर्मा निदेशक पी.एम.ई	हरे चारे का संरक्षण एवं इसका दूध उत्पादन में महत्व	27.02.2014

आप सभी पशुपालक भाईयों से निवेदन है कि उक्त समय पर प्रत्येक गुरूवार को आकाशवाणी बीकानेर के मीडियम वेव 215.05 मीटर (1395 किलो हर्टस) पर इन वार्ताओं को सुनकर पशुपालन व्यवसाय में लाभ उठायें।

मुस्कान !

प्रधान संपादक
प्रो. सी. के. मुरड़िया
सह संपादक
प्रो. ए. के. कटारिया
प्रो. उर्मिला पानू
दिनेश चन्द्र सक्सेना
उपनिदेशक (जनसम्पर्क)
संकलन सहयोगी
सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली

प्रसार शिक्षा निदेशालय
0151-2200505
पशु पालन नए आयाम
मासिक अंक : जनवरी 2014

बुक पोस्ट

भारत सरकार की सेवार्थ

सेवामें

.....

.....

.....

संपादक, प्रकाशक और मुद्रक सी. के. मुरड़िया के लिए प्रसार शिक्षा निदेशालय, राजस्थान पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर से प्रकाशित और डायमंड प्रिंटर्स एण्ड स्टेशनरी नत्थूसर गेट बीकानेर से मुद्रित